RAWATSAR P.G. COLLEGE

'Sanskriti Ka Badlta Swaroop Aur AI Ki Bhumika' (SBSAIB-2025)

DATE: 25 January 2025

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)

Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

कुन्तोः सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों के विघटन को चित्रित करता उपन्यास

डॉ. रामदेव सिंह भामू, आचार्य, शोध–पर्यवेक्षक (हिन्दी विभाग) राजकीय विज्ञान महाविद्यालय, सीकर (राज.)

ई–मेलः– ramdevsinghbhamu@gmail.com

पवन कुमार मीना, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, पण्डित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय, सीकर (राज.) एवं सहायक आचार्य (हिन्दी) राजकीय महाविद्यालय, कनवास, कोटा (राज.) ई–मेल - pavanjrd@gmail.com

1. शोध सारांश

कुन्तो उपन्यास में वर्तमान काल में भारतीय नाते–रिश्तों में आ रही टूटन व अपवित्रता का चित्रण है। इसमें भारतीय युवा वर्ग का पश्चिमी संस्कृति के प्रति बढ़ता लगाव एवं भारतीय संस्कृति व नैतिकता का खुला उल्लंघन दर्शाया गया है। आज का युवा वर्ग स्वच्छंदतावाद का समर्थक एवं भारतीय दाम्पत्य जीवन की गरिमा को ध्वस्त करता दृष्टिगोचर होता है। इसमें वृद्धजनों की अश्लीलतापूर्ण एवं निर्लज्जतापूर्ण हरकतों के माध्यम से नैतिक मूल्यों के विघटन को उजागर किया गया है। इसमें भोग–विलास की बढ़ती लालसा और स्त्री–पुरुष सम्बन्धों में बढ़ती कुण्ठा, टूटन, अविश्वास व निराशा को प्रदर्शित किया है। आज के युवा वर्ग में बढ़ती हुई नशे की प्रवृत्ति तथा उसके भीषण परिणाम की अभिव्यक्ति हुई है। इसमें एक तरफ नारी के प्रेमपूर्ण समर्पण, विश्वास, अपनत्व भावना, सहयोग भावना, आशा, दया, लज्जा, करुणा, सब्र व ममता जैसे उच्च मानवीय मूल्य दृष्टव्य है, तो दूसरी तरफ पुरुष की कठोरता, रूखापन, अजनबीपन, अश्लीलता, लापरवाही, विलासिता, लालसा, रूप के प्रति आसक्ति, घृणा, द्वेषपूर्ण और शोषणपूर्ण रवैया सामने आता है। यहाँ देह व्यापार की घृणित मानसिकता को व्यक्त किया गया है। इसमें पड़ोसियों की स्वार्थपरता, धोखेबाजी, लूटपाट व अनाचार द्वारा नैतिकता का पतन चित्रित किया है। आज के युवा वर्ग की वार्तालाप सम्बन्धी संस्कारहीनता, व्यंग्यपूर्ण तथा उलाहनापूर्ण ढंग का प्रदर्शन दिखाई देता है। कुन्तो उपन्यास में धनराज और जयदेव की निष्ठुरता, हृदयहीनता व निकृष्टता का यथार्थ चित्रण है जो अपनी सहचरी की मृत्यु पर खुश होकर प्रेमिका के प्रति आसक्ति में मग्न रहते हैं। इसमें आधुनिक पीढ़ी मूल्यहीनता और बदलते सांस्कृतिक स्वरूप की परिचायक है।

2. बीज शब्दः भारतीय संस्कृति, दाम्पत्य जीवन, नैतिकता, वृद्धजन, अश्लीलता, असभ्यता, निकृष्टता, संवेदनहीन, मद्यपान, आसक्त, वेश्यावृत्ति, आत्मिक प्रेम, आकर्षण, विश्वासघात, सुरक्षा, निर्दयता, उपेक्षाभाव, विघटन, स्वच्छंदतावाद, समर्पण, मूल्यहीनता, संस्कारहीनता, घृणित मानसिकता, स्वार्थपरता, नारी शोषण, मरणासन्न।

03. मूल शोधपत्र

उपन्यास मानव जीवन का समग्र मूल्यांकन करने की एक श्रेष्ठ विधा है। हिन्दी साहित्य में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का चित्रण करने वाले अनेक उपन्यासों का सृजन हुआ है। ऐसा ही भीष्म साहनी द्वारा रचित उपन्यास है–कुन्तो, जिसमें भारतीय सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों के विघटन को चित्रित किया गया है। भारतीय संस्कृति में रिश्तों–नातों को बहुत उच्च स्थान दिया गया है। हमारी संस्कृति में भाई–बहिन का रिश्ता अत्यधिक पवित्र माना जाता है परन्तु कुन्तो उपन्यास में जयदेव की माँ उसका विवाह उसकी मौसेरी बहिन सुषमा से करवाने की बात कहकर इस पवित्र सम्बन्ध को खण्डित करने पर आमादा है। यह हमारी संस्कृति के विघटन का ज्वलन्त उदाहरण है। "अगर तेरा सुषमा के साथ उन्स हो गया है, और तू उसके साथ ब्याह करना चाहता है तो बता दे। सारी दुनिया एक तरफ, और मेरे बेटे की खुशी एक तरफ, मैं जैसे भी होगा तेरा साथ दूँगी। वह मेरी बहिन की बेटी है। बिरादरी थू–थू करेगी पर मैं सुन लूँगी, सब सह लूँगी। मुझे तेरी खुशी मंजूर है।"[1] जयदेव एवं कुन्तो वर्तमान पीढ़ी का प्रतीक है जो खुलेआम मालगाड़ी में बैठकर गले मिलते हैं, एक–दूसरे का चुम्बन लेते हैं। ये स्वच्छंदतावाद का समर्थन करते नजर आते हैं। इस प्रकार ये दोनों पश्चिमी संस्कृति को अपनाकर भारतीय संस्कृति एवं नैतिकता का खुला उल्लंघन करते हैं। ये दोनों निर्लज्ज व निस्संकोच होकर समाज के नियमों को तोड़ते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। "यह बेपर्दगी नहीं? बेशर्मी नहीं? अच्छे घरों की लड़कियाँ, यों सिर–मुँह उघाड़े मालगाड़ियों पर दिन–दहाड़े घूमती फिरती है? इनका घर–ठिकाना नहीं है? दिन के वक्त खुली मालगाड़ी में बग़लगीर होना, खुले डिब्बे में बोसे लेना, यह बदचलनी नहीं तो और क्या है? तू इसे अच्छा समझता है।"[2] धनराज विदेशी संस्कृति से प्रभावित होकर भारतीय दाम्पत्य जीवन की गरिमा को ध्वस्त करता हुआ दृष्टिगोचर होता है। जब उसकी पत्नी थुलथुल उसे समझाती है तो वह क्रोध में भर जाता है तथा गाली–गलौज करता हुआ कटुवचन कहता है। वह थुलथुल को मानसिक रूप से यातना देता है, जो भारतीय संस्कृति के अनुरूप नहीं है। "अब उसे भूल जाओ जी, वह जो सात समन्दर पार बैठी है। और यह कहकर हँस दी थी।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

धनराज उसी क्षण छिटककर उससे अलग हो गया था, हरामजादी, क्या बके जा रही है? चुप नहीं रह सकती? हट जा, दूर हो जा, खबरदार जो मुझे हाथ लगाया तो।"[3] हमारी संस्कृति में दाम्पत्य जीवन आपसी विश्वास, अपनत्व भावना एवं आपसी सहयोग पर आश्रित है परन्तु गिरीश अपनी अर्द्धांगिनी सुषमा से अजनबी जैसा कठोर व रूखा व्यवहार करके कहता है कि आप हमें कहीं भी जाने से नहीं रोकेंगी और न हम आपको। इस प्रकार गिरीश हमारी सांस्कृतिकता व नैतिकता पर प्रहार करता है। यहाँ दाम्पत्य जीवन में पनपता अलगाव और रूखापन प्रदर्शित होता है। "एक बार सुषमा के बार–बार आग्रह करने पर कि आज आप नहीं जाइए, रुक जाइए, उसने दो टूक कह दिया था, आप हमें कहीं भी जाने से नहीं रोकेंगी। हम आपको नहीं रोकेंगे। उसके इस रूखे व्यवहार के कारण ही सुषमा अभी तक उसके जीवन के निजी घेरे के अन्दर प्रवेश नहीं कर पाई थी।"[4] भारतीय संस्कृति में विवाह एक पवित्र बन्धन माना गया है, जो सोलह संस्कारों में से एक संस्कार होता है। एक ऐसा संस्कार जिसमें दो अजनबी वर–वधू जीवनभर परस्पर साथ निभाने का प्रण लेते हैं परन्तु गिरीश इस पवित्र बन्धन को तोड़कर तलाक की बात करता है, जो भारतीय परम्परा को छिन्न–भिन्न करता हुआ नजर आता है। "हम एक–दूसरे के लिए नहीं बनें। इस विवाह को घिसटना भूल होगी।"[5] भारतीय समाज में वृद्धजन संस्कृति के रक्षक व युवा पीढ़ी के उपदेशक माने जाते हैं किन्तु कुन्तो उपन्यास में चाचा मंगतराम नंगे बदन नाचता–गाता हुआ निर्लज्जतापूर्ण बातें करता है। रामनाथ का ताऊ अश्लील कहानियाँ सुनाता है एवं सभी बूढ़े व्यक्ति बेशर्म बनकर हँसते हैं। एक–दूसरे को माँ–बहिन की अश्लील व फूहड़ गालियाँ निकालते हैं। इस प्रकार वर्तमान समय में हो रहे नैतिक मूल्यों के विघटन को प्रस्तुत किया गया है। "ये बूढ़े हमें तो उपदेश देते रहते हैं पर आपस में बड़ी फोहश बातें करते हैं। यह जो चाचा मंगतराम है ना, गोरा, लम्बा–सा, इसे मैंने देखा, पिछली पिकनिक पर नंगे बदन, तौलिया बाँधे हुए, हाथ पसार–पसारकर चुटकी बजाते हुए नाच–नाचकर गा रहा थाः लच्छी दियाँ गोल छातियाँ और सब थाली बजा–बजाकर उसका साथ दे रहे थे। तुम्हारे ताऊ भी अश्लील किस्से सुनाते हैं? मदन ने रामनाथ से पूछा–वह भी तो कर्त्ता–धर्ता है। पर ऐसे मौकों पर माँ–बहिन की गालियाँ जरूर निकालते रहते हैं। हमारे सामने नहीं बोलते पर अपने साथियों के बीच सब कुछ बोलते हैं।"[6] भारतीय संस्कृति में पत्नी को अर्द्धांगिनी माना गया है। वह पुरुष की सहचरी है। इस उपन्यास में धनराज की घृणित सोच हमारे सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों को पूर्णतः खण्डित कर देती है। धनराज अपनी जीवनसंगिनी को जलते देखकर संकल्प–विकल्प की अवस्था में मग्न रहता है। एक ओर वह अनुभव करता है कि यह बहुत परेशान कर देने वाली स्थिति है, दूसरी ओर वह अपने हृदय में अत्यन्त सुख का अनुभव करता है। वह सोचता है कि यदि थुलथुल अग्नि में जलकर मृत्यु को प्राप्त हो जाए तो यह बहुत अच्छी बात होगी क्योंकि वह डॉर्की डार्लिंग मोना से तभी मिल सकता है। एक तरफ वह इस बात से डरता है कि लोग उसे ही थुलथुल की मृत्यु का जिम्मेदार मानेंगे, दूसरी तरफ वह पूर्णतः सन्तुष्ट हो जाता है कि इसकी मृत्यु के उपरान्त इससे पीछा छूट जाएगा। यह कैसा पति–पत्नी का रिश्ता है? यह तो भारतीय दाम्पत्य जीवन पर किया गया खुला कुठाराघात है। "एक ओर झकझोरने वाला अनुभव, और साथ में अन्तर्तम को आल्हादित कर देने वाली विरोधी भावना, एक साथ, एक ही क्षण में, एक ही समय में कैसे उठ सकती है? क्यों कर उठती है? एक धरातल पर आघात, उसी धरातल पर सुख की अनुभूति? उसे जलता देखकर मैं सिहर उठा था। उसे जलता देखकर मुझे सन्तोष हुआ था।"[7] भारतीय समाज में मद्यपान अनैतिक कार्य माना गया है क्योंकि मदिरापान के बाद व्यक्ति अपनी चेतना खो देता है। चेतनाशून्य जीवन मृत्यु के समान माना गया है। धनराज मदिरापान करके कभी हँसने लगता है, कभी रोता है, कभी गन्दी–गन्दी गालियाँ बकता है, तो कभी स्वयं ही बड़बड़ाने लगता है। इस प्रकार वह अनैतिक व असभ्य आचरण करके निकृष्टता प्रदर्शित करता है। "पर चौथे पेग के बाद सरूर बीच–बीच में टूटने लगता। प्रेयसी पर मनन करने की एकाग्रता टूटने लगती। किसी–किसी वक़्त धनराज बड़बड़ाने लगता। कभी–कभी रोने भी लगता। रोता तो ज़ार–ज़ार। सुनने वालों को लगता, अभी छाती पीटने लगेगा। कभी–कभी गालियाँ बकने लगता, और गालियाँ भी ऐसी जिन्हें उसने बचपन में गलियों में सुन रखा था। कभी–कभी कोई अनूठी गाली उसके मुँह से निकल जाती तो उसे स्वयं ही सुन खिलखिलाकर हँसने लगता। वही गाली बार–बार दोहराता और बार–बार हँसता।"[8] भारतीय संस्कृति में आदर्श दाम्पत्य जीवन की परम्परा रही है। थुलथुल अपने पति के इन्तज़ार में पूरा जीवन समर्पित करती है। परदेश गए पति की यादों के सहारे जीवित रहती है। पति के आगमन पर इस तरह आल्हादित होती है, जैसे प्यासे को पानी मिलने

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

पर वह आनन्दित हो उठता है। और जब धनराज आता है तो थुलथुल की समस्त भावनाओं पर वज्रपात करता हुआ, अपनी प्रेमिका की तस्वीर को अपने कमरे में सजा कर रख देता है। थुलथुल के पूछने पर उसे डाँटता–पीटता हुआ गालियाँ निकालने लगता है। वह पूरी तरह संवेदनहीन बनकर थुलथुल की पवित्र व प्रेमिल भावनाओं के संसार को नष्ट कर देता है। यहाँ भारतीय संस्कृति का बदलता स्वरूप स्पष्ट होता है। "पर ज़रा सोचो, धनराज! तुम सात साल बाद घर लौटे हो और तुम्हारी घरवाली तुम्हारे आँगन में तुम्हारे इन्तज़ार में पलकें बिछाए बैठी रही है। आज तुम उसके सामने अपनी प्रेमिका की तस्वीर सजा कर रख दो, उसे जली–कटी भी कहने लगो, तो उसके दिल पर क्या गुज़रती होगी? उसके दिल को ठेस पहुँच सकती है। सात साल का समय कोई कम तो नहीं होता।"[9] दाम्पत्य जीवन का आधार प्रेम, समर्पण व आपसी विश्वास होता है परन्तु जयदेव–कुन्तो के रिश्ते में एक ओर कुन्तो पूर्ण समर्पित है, तो जयदेव पूर्णतः बेपरवाह। कुन्तो आदर्श भारतीय नारी है, जो केवल जयदेव से प्रेम करती है। जयदेव कुन्तो को धोखा देता है, सुषमा के प्रति अत्यन्त आसक्त दिखाई पड़ता है। जयदेव भारतीय सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों का हनन करता है। "सुषमा उसे अपनी ओर खींच सकती है, पर वह उसके सामने चुप्पू बनी रहती होगी, इंटलेक्चुअल बनने की कोशिश करती रही होगी। चुप रहो, कुन्तो! यह बकवास बन्द करो। जयदेव ने लगभग चीखकर कहा था। कुन्तो सन्नाटे में आ गई थी। जयदेव यों बौखला जाएगा, उसकी इसे आशा नहीं थी। अब उसे यकीन हो गया था कि सुषमा, जयदेव की मौसेरी बहिन नहीं, वह जयदेव के रोम–रोम में बसी हुई है।"[10] प्रोफेसर साहब का बड़ा भाई दौलत के बल पर वेश्यावृत्ति की घृणित मानसिकता को प्रकट करने वाला व मौज–मस्ती युक्त विदेशी संस्कृति का परिचायक है, जो भारतीय जीवन मूल्यों को विघटित करता है। "वहाँ लड़की के साथ शाम बिताना हो तो पच्चीस–तीस डॉलर तो जरूर ही निकल जाते हैं। तुम उसे किसी रेस्तराँ में खाना खिलाने ले जाओगे, कहीं डांस पर या थियटर में ले जाओगे। बीस–पच्चीस डॉलर तो कहीं नहीं गए। लड़की के चेहरे पर लगी सुर्खी को देखकर ही पता चल जाता है कि उस पर कितने पैसे खर्च होंगे।"[11] कुन्तो सच्चे प्रेम की प्रतिमूर्ति है, जो शुद्ध आत्मिक प्रेम को महत्त्व देती है। कुन्तो का प्रेम समर्पण भाव पर टिका हुआ है। उसमें लेशमात्र भी स्वार्थ की भावना नहीं है। सज–सँवरकर, सुन्दर रूप बनाकर पुरुष को रिझाना व अपने वश में करने को वह प्रेम नहीं मानती है। कुन्तो शारीरिक आकर्षण की भूखी नहीं है। शारीरिक आकर्षण को तो वह गणिकाओं का गहना मानती है। इस तरह कुन्तो भारतीय संस्कृति की परिचायिका है परन्तु जयदेव इसके विपरीत व्यवहार करता है। "मैं इससे जो प्रेम करती हूँ क्या इसे रिझाने के लिए करती हूँ? इसका दिल जीतने के लिए? इसे अपने साथ बाँधे रखने के लिए? और सोचते–सोचते कुन्तो सचमुच रो पड़ी थी। मैं इससे प्रेम करूँ, ताकि यह मुझे ठुकराए नहीं? अगर मेरा प्रेम इसके दिल को नहीं छूता तो क्या बन–सँवरकर आने पर छूने लगेगा। ऐसे तो वेश्याएँ ग्राहकों के पास जाती है।"[12] भारतीय संस्कृति में भाई–बहिन के रिश्ते में मर्यादा, अदब, सम्मान, तमीज आदि का अत्यधिक महत्त्व है। यहाँ जयदेव अपनी सगी बहिन विद्या से ही बदतमीजी से बातें करता है। वह व्यंग्यात्मक लहजे में आत्मसम्मान को इतनी ठेस पहुँचाता है कि विद्या इस आघात के कारण अपने जीवन से ही हाथ धो बैठती है। यहाँ जयदेव नैतिकताहीन व्यवहार करता दिखाई देता है। "तुम भी कैसी बहिन हो? सात साल अभी ब्याह को नहीं हुए और चार कतूरे जन दिए?"[13] भारतीय विवाह संस्कार के अनुसार पति का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि वह अपनी पत्नी की सुरक्षा करने के साथ–साथ, उसे प्रेम व सम्मान प्रदान करे परन्तु धनराज अपनी पत्नी थुलथुल को डराता, धमकाता और पीटता है। धनराज नारी का शोषण व अपमान करता है। इस प्रकार का कृत्य अनैतिकता का परिचायक है। "उस वक़्त धन्ना कुर्सी पर बैठा अपने जूते का फ़ीता खोल रहा था और थुलथुल उसके निकट फ़र्श पर बैठी बतिया रही थी। तभी धन्ने का पैर थुलथुल के जबड़े पर पड़ा था जिससे उसका सिर चकरा गया था।"[14] विघटित होते सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों का उदाहरण तब मिलता है, जब सुबह लालाजी का पड़ोसी उनकी रक्षा करने का वचन देता है, ढाँढस बँधाता है एवं सच्चे पड़ोसी का धर्म निभाने की कसमें खाता है। उसी दिन शाम को वह लालाजी के दरवाजे का ताला तोड़कर लूटपाट मचाता है और घर पर अपना कब्जा कर लेता है। यह कृत्य विश्वासघात की इन्तहा है। "उसी शाम, घर के दरवाजे पर लगा ताला देखकर, उसी पड़ोसी ने जो लालाजी की हिफाजत करता रहा था, फिर न जाने कहाँ से मुहल्ले के हमदर्द भागते हुए पहुँच गए थे, और घण्टे भर के अन्दर घर खाली कर दिया गया था, और देखते–ही–देखते एक दाढ़ीवाले सज्जन उसमें अपने दो ट्रंक और परिवार के कुछेक लोगों को लेकर घर में जमकर बैठ

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

भी गए थे।"[15] एक सच्ची व समर्पित पत्नी कुन्तो मरणासन्न स्थिति में होकर भी अपने पति जयदेव को अपने सम्मुख देखना चाहती है। इसके विपरीत जयदेव अपनी पत्नी को मरते हुए देखकर भी सुषमा के प्रति आसक्ति रखता है। मृत्यु की तरफ बढ़ती कुन्तो की अन्तिम इच्छा यह है कि उसके संसार से विदा होते समय उसका पति उसके सामने रहे, जिससे वह हँसते–हँसते इस भवसागर को पार कर सके परन्तु जयदेव उसकी तरफ पीठ कर लेता है एवं सुषमा से हँस–हँसकर बातें करता रहता है। जयदेव की निर्दयता एवं उपेक्षाभाव को देखकर कुन्तो का अन्तर्मन चीत्कार करने लगा। जयदेव के इस रवैये ने निरीह व निश्छल कुन्तो की जान ले ली। "जयदेव ने भी क्यों मेरी और पीठ कर ली है? जयदेव तुम तो घड़ी दो घड़ी मेरी आँखों के सामने रह सकते हो। तुम पास रहोगे तो मुझे लगेगा तुम मुझे विदा करने आए हो। मैं पागल थी जो तुमसे अपने अधिकार माँगती रही। मुझसे बहुत बड़ी भूल हुई। पर अब मैं और भूल नहीं करूँगी। अब तो तुम्हें आजाद किये जा रही हूँ। इतना हक तो मेरा भी है कि कुछ देर के लिए मेरी आँखों के सामने बने रहो। कुछ देर तक तुम्हें देखती रहना चाहती हूँ। तुम्हारे सामने आ जाने पर लगता है जैसे मेरे जख़्मी दिल पर चन्दन का लेप हो रहा है। और मैं जैसे किसी झूले पर झूलने लगी हूँ। बस, कुछ देर तक तुम्हें देखते रहना चाहती हूँ। मैंने तुम्हारा संग पाया, मैं धन्य हुई।"[16]

4. निष्कर्ष

कुन्तो उपन्यास में पारिवारिक रिश्तों का विकृत रूप लक्षित हुआ है। जहाँ एक तरफ पाश्चात्य संस्कृति का निकृष्टतम रूप दिखाई देता है, तो दूसरी तरफ भारतीय दाम्पत्य जीवन का विघटन परिलक्षित होता है। पाश्चात्यता के प्रभाव से तलाक जैसी कुरीतियाँ जन्म लेने लगी है। बुजुर्ग पीढ़ी की अश्लीलता उभरकर आई है। धनराज का अपनी जीवनसंगिनी की मृत्यु पर प्रसन्न होना निर्दयता व क्रूरता की हद पार कर देता है। नशा मनुष्य का जीवन बिगाड़ रहा है। यहाँ नारी का शोषण प्रदर्शित है, तो पुरुष की लापरवाही व धोखेबाजी। इसमें वेश्यावृत्ति जैसी घृणित मानसिकता को भी बढ़ावा मिला है। कुन्तो सच्ची व समर्पित सहचरी का उदाहरण है, तो जयदेव कामुकता का जीता जागता उदाहरण है। कहीं बातचीत करने में तहजीब की कमी दिखती है, तो कहीं पड़ोसियों का विश्वासघात। जयदेव भारतीय सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों को विघटित करने वाले व्यक्ति के रूप में उभरकर सामने आया है। वह आधुनिक पीढ़ी की मूल्यहीनता एवं बदलते सांस्कृतिक स्वरूप का परिचायक है।

5. सन्दर्भ सूची

1. डॉ. शर्मिष्ठा आई. पटेल, भीष्म साहनी के उपन्यासों में सम्वेदना और शिल्प, श्रीनिवास पब्लिकेशन–जयपुर, प्रथम संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–129
2. भीष्म साहनी, कुन्तो, राजकमल प्रकाशन–नई दिल्ली, पहला संस्करण–1993, पृष्ठ संख्या–102
3. वही, पृष्ठ संख्या–144
4. वही, पृष्ठ संख्या–199
5. डॉ. शर्मिष्ठा आई. पटेल, भीष्म साहनी के उपन्यासों में सम्वेदना और शिल्प, श्रीनिवास पब्लिकेशन–जयपुर, प्रथम संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–131
6. भीष्म साहनी, कुन्तो, राजकमल प्रकाशन–नई दिल्ली, पहला संस्करण–1993, पृष्ठ संख्या–25
7. वही, पृष्ठ संख्या–229
8. वही, पृष्ठ संख्या–248
9. डॉ. शर्मिष्ठा आई. पटेल, भीष्म साहनी के उपन्यासों में सम्वेदना और शिल्प, श्रीनिवास पब्लिकेशन–जयपुर, प्रथम संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–130
10. भीष्म साहनी, कुन्तो, राजकमल प्रकाशन–नई दिल्ली, पहला संस्करण–1993, पृष्ठ संख्या–258
11. वही, पृष्ठ संख्या–228
12. वही, पृष्ठ संख्या–293
13. डॉ. शर्मिष्ठा आई. पटेल, भीष्म साहनी के उपन्यासों में सम्वेदना और शिल्प, श्रीनिवास पब्लिकेशन–जयपुर, प्रथम संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–132
14. भीष्म साहनी, कुन्तो, राजकमल प्रकाशन–नई दिल्ली, पहला संस्करण–1993, पृष्ठ संख्या–227
15. वही, पृष्ठ संख्या–331
16- वही, पृष्ठ संख्या–316